विचार बिन्दु

दुर्बल चरित्र का व्यक्ति उस सरकंडे जैसा है जो हवा के हर झौंके पर झुक जाता है।–माघ

यह चुप्पी क्या कहती है?

गत तीन माह से, जब से डोनाल्ड ट्रंप दोबारा अमेरिका के राष्ट्रपति बने हैं, वह भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को किसी न किसी बहाने लगातार अपमानित कर रहे हैं, किंतु मोदी द्वारा इसके बारे में कोई वक्तव्य या प्रतिक्रिया न देना आश्चर्य का विषय बन गया है। सबसे पहले तो डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण के अवसर पर भारत के प्रधानमंत्री को आमंत्रित नहीं किया गया, इसके बावजूद कि प्रधानमंत्री डोनाल्ड ट्रंप को अपना बहुत ही निकट का दोस्त बताते रहे हैं । भारत के विदेश मंत्री जयशंकर ने अमेरिका के राष्ट्रपति कार्यालय से इस संबंध में मोदी के लिए निमंत्रण प्राप्त करने का प्रयास भी किया, किंतु वे सफल नहीं हो पाए । बाद में भारत के राष्ट्रीय मीडिया द्वारा इसी बात को प्रमुखता से दिखाया गया कि कैसे भारत के विदेश मंत्री जय शंकर को शपथ ग्रहण समारोह के दौरान प्रथम पंक्ति में बिठाया गया।

शपथ ग्रहण के कुछ दिनों बाद प्रधानमंत्री अमेरिका गए। वे वहां पर व्हाइट हाउस के ओवल कार्यालय में डोनाल्ड ट्रंप से मिले । वहां से उनकी बातचीत का सीधा प्रसारण टीवी के माध्यम से किया गया । इस बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री की मुद्रा स्वाभाविक नहीं लगी और जब अमेरिकी राष्ट्रपति ने अमेरिकी भारत व्यापार के बारे में गलत तथ्य कहे, तो मोदी ने उसका प्रतिकार नहीं किया और वह सिर झुकाए हुए, ट्रंप द्वारा कही गई बातों को सुनते रहे। इसके विपरीत, जब अमेरिकी राष्ट्रपति ने यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की, फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रो से मुलाकात की तो, जब भी राष्ट्रपति ट्रंप ने कोई गलत बात कही, तो उन्होंने, उन्हें रोककर तत्काल प्रतिकार किया और विरोध जताया। यही एक स्वाभिमानी राष्ट्रीय मुखिया से अपेक्षित भी होता है। उनकी मुद्रा भी एक बराबरी के राष्ट्रध्यक्षों की बातचीत जैसी थी। मोदी का यह व्यवहार कुछ आश्चर्यचकित करने वाला था, क्योंकि मोदी सदैव डोनाल्ड ट्रंप को अपना गहरा दोस्त कहकर संबोधित करते रहे हैं। सामान्यत: मोदी प्रत्येक छोटी–बड़ी बात पर सदैव अपनी प्रतिक्रिया किसी न किसी माध्यम से देते रहे हैं किंतु ट्रंप के समक्ष उन्होंने ऐसा नहीं किया।

राष्ट्रपति ट्रंप ने पद ग्रहण करते ही, गैर कानूनी रूप से अमेरिका में रह रहे विदेशी प्रवासियों को ट्रंप द्वारा वापस अपने देश में भेजने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी । भारत के लगभग 200 प्रवासियों को अमेरिकी सेना के हवाई जहाज में भरकर बेड़ियां लगाकर भारत भेजा गया। यह न केवल अपमानजनक बल्कि अमानवीय भी था, किंतु इसका विरोध न प्रधानमंत्री ने किया न विदेश मंत्रालय ने । वेनेजुएला के प्रवासियों के साथ जब इसी प्रकार का बर्ताव किया गया तो वहां के राष्ट्रपति ने इसका विरोध किया और अमेरिका को स्पष्ट कर दिया कि वे अपना यात्री विमान भेजकर अपने नागरिकों को अपने देश ले जाएंगे।

भारतीयों के इस अपमान का कोई प्रतिरोध न करना, प्रधानमंत्री के उस दावे के साथ मेल नहीं खाता है जो उन्होंने प्रधानमंत्री बनने के पहले कई बार किया कि वे सभी देशों के साथ बराबरी के स्तर पर बात करेंगे और आवश्यकता हुई तो आँखें भी दिखाएंगे। मोदी ने तो इस ट्रंप से मुलाकात के दौरान शायद इसका प्रतीकात्मक विरोध भी नहीं किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अगली बार भी इसी तरह भारतीय नागरिकों को अपमानित कर पनामा के माध्यम से भेजा गया। वहां से लौटे एक भारतीय नागरिक सतपाल सिंह ने इंडिया टुडे कॉन्क्लेव के दौरान बताया कि उनके साथ अमेरिकियों द्वारा बहुत खराब व्यवहार किया गया। उन्हें बहुत ठंडे तापमान में रखा गया और बीमार होने पर दवा तक नहीं दी गई। अमेरिका ने ऐसा करके न केवल भारत के स्वाभिमान पर आघात किया अपितु भारतीयों के साथ अमानवीय व्यवहार भी किया।

कुछ समय बाद, अमेरिका के राज्यों की गवर्नरों की बैठक में राष्ट्रपति ट्रंप ने स्पष्ट रूप से यह कहा कि मैंने मेरे दोस्त नरेंद्र मोदी को 21 मिलियन डॉलर (अर्थात लगभग 180 करोड रुपए) चुनाव के लिए दिए । यह एक प्रकार से सीधा आरोप था, जिसका खंडन अथवा उस बारे में स्पष्टीकरण भारत के प्रधानमंत्री अथवा भारत सरकार द्वारा किया जाना चाहिए था। देश इसका इंतजार ही करता रहा, किंतु ऐसा अब तक नहीं हुआ, और आज भी राष्ट्रपति का बयान यथावत है ।

नरेंद्र मोदी सामान्यतया, विद्यार्थियों से परीक्षा से संबंधित विषयों पर चर्चा करते रहते हैं और अपने स्वाभिमान की बात कई स्थानों पर करते हैं, किंतु भारतीयों को बेड़ियां डालकर भेजने पर उसका विरोध तक न करना उनकी कमजोरी और समर्पण भाव को ही दर्शाता है। यह इसलिए भी अधिक अटपटा लगा क्योंकि नरेंद्र मोदी ने बड़े मजबूत और कठोर निर्णय लेने वाले प्रधानमंत्री के रूप में अपनी छवि बनाई है, चाहे तीन तलाक वाला कानून बनाना हो, कश्मीर में धारा 370 हटाना हो, पूरे देश में लॉक डाउन लगाना हो या फिर अचानक नोटबंदी की घोषणा हो।

जो प्रधानमंत्री एक समय रूस, यूक्रेन का युद्ध रुकवाने की बात करते थे और ग़ज़ा पर लगातार बयान देते थे, वे इतने महत्वपूर्ण विषयों और ट्रंप के अपमानजनक व्यवहार पर एक शब्द तक न बोलें और पूर्णतया चुप्पी साध लें, यह समझ से परे लगता है। इसी प्रकार जो मोदी, पूर्व राष्ट्रपति को, एक देश एक चुनाव वाली समिति का अध्यक्ष बनाने और स्वायत्त संस्था आर बी आई के गवर्नर को प्रधानमंत्री कार्यालय में सचिव के पद पर लगाने जैसा असामान्य निर्णय लेने की क्षमता रखते हों, वे इतना सब होने पर भी चुप्पी साधे रहें, यह रहस्यात्मक लगता है।

इस बारे में विपक्ष ने जब भी सरकार से स्पष्टीकरण मांगा तो सरकार ने लगातार चुप्पी ही बनाई रखी। जो प्रधानमंत्री 2014 से 24 तक लगातार टीवी पर नियमित रूप से अवतरित होते रहते थे, उन्होंने इन सारी घटनाओं के बावजूद एक बार भी कभी टीवी पर आकर अपना पक्ष नहीं रखा।

डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में गरिमा की सारी सीमा पार करते हुए यहां तक कह डाला कि उन्होंने भारत को एक्सपोज कर दिया है। इसका सीधा मतलब यह है कि उन्होंने भारत की पोल खोल दी है।

ट्रंप के कड़े रुख को भांपते हुए भारत ने बिना अमेरिका के कहे हुए ही, उनके द्वारा निर्मित हार्ले डेविडसन मोटर साइकिल और टेस्ला की इलेक्ट्रिक कार पर आयात शुल्क बहुत घटा दिया है। उल्लेखनीय है कि टेस्ला के मालिक एलोन मस्क है जो राष्ट्रपति ट्रंप के नजदीकी मित्र हैं। टेस्ला पर तो आयात शुल्क लगभग 110% से घटाकर 15% कर दिया गया है । इससे इस कंपनी को बहुत फायदा होगा और उसका पूरा लाभ एलोन मस्क को जाएगा।

भारत द्वारा इस प्रकार का आत्मसमर्पण कभी नहीं देखा गया और भारत सदैव देश हित में स्वायत्त और स्वतंत्र नीतियां बनाता रहा है । भारत द्वारा विभिन्न अमेरिकी वस्तुओं पर आयात शुल्क इसलिए अधिक रखा जाता है कि उसका भारतीय उद्योगों पर विपरीत प्रभाव न पड़े। अमेरिका ने केवल यह धमकी दी थी कि वे भारत के साथ पारस्परिक रूप से समान आयात शुल्क (टैरिफ) रखेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि भारत टैरिफ कम नहीं करेगा तो अमेरिका भी भारत से वहां जाने वाली वस्तुओं पर उतना ही अधिक टैरिफ लगाएगा। यदि ऐसा होता है, तो भारतीय निर्यातकों का सामान वहां बिकना बहुत कठिन हो जाएगा जिससे यहां के उद्योगों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा ।

यही नहीं, जब प्रधानमंत्री व्हाइट हाउस में गए और वहां पर एलन मस्क उनसे मिले तो उनके साथ उनके परिवार के सभी सदस्य भी थे और उन्होंने अपने छोटे पुत्र को कंधे पर उठा रखा था। क्या उनका यह व्यवहार हमारे प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा के अनुरूप है?

ट्रंप के प्रतिदिन के बयानों से विश्व में संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है। विभिन्न प्रकार के उनके बयानों के बावजूद, प्रधानमंत्री मोदी का एक शब्द नहीं बोलना और किसी प्रकार की प्रतिक्रिया न देना और विरोध नहीं करना, कई प्रकार की शंकाएं भारतीयों के मन में उत्पन्न कर रहा है कि प्रधानमंत्री आखिर ऐसा क्यों कर रहे हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि डोनाल्ड ट्रंप को भारतीय प्रधानमंत्री की ऐसी कोई कमजोरी हाथ लग गई है जिसके कारण वे प्रधानमंत्री पर दबाव बनाने में कामयाब हो रहे हैं।

गुजरात का मुख्यमंत्री बनने से पहले 1993 के आस पास नरेंद्र मोदी अमेरिका में काफी समय तक रहे थे। उस समय उनकी वहां पर क्या गतिविधियां थीं और वे किससे मिलते थे, इस बारे में सार्वजनिक रूप से बहुत जानकारी उपलब्ध नहीं है । क्या उस समय की कोई घटना ट्रंप की जानकारी में आई है जिसके कारण वे हमारे प्रधानमंत्री को अपमानित करते जा रहे हैं और वे कुछ नहीं बोल पा रहे हैं।

एक कयास यह लगाया जा रहा है कि अमेरिका के चुनाव से पूर्व जब मोदी वहां गए तो वे ट्रंप से नहीं मिले जबकि ट्रंप ने पहले ही यह वक्तव्य दे दिया था कि मोदी उनसे मिलने आएंगे। इसे ट्रंप ने अपनाअपमान समझा और शायद वे इसी का बदला ले रहे हों।

प्रधानमंत्री की चुप्पी अडानी प्रकरण के कारण भी हो सकती है, जो अमेरिका में लंबित है। वहां की सरकार ने भारत सरकार के विधि मंत्रालय को एक पत्र भेज कर गौतम अडानी पर सम्मन तामील कराने में सहायता मांगी है। कहा तो यह भी जा रहा है कि इसी पत्र को रुकवाने के लिए मोदी आपाधापी में ट्रंप से मिलने अमेरिका गए, किंतु फिर भी वे इसमें सफल नहीं हो पाए।

जो प्रधानमंत्री एक समय रूस, यूक्रेन का युद्ध रुकवाने की बात करते थे और ग़ज़ा पर लगातार बयान देते थे, वे इतने महत्वपूर्ण विषयों और ट्रंप के अपमानजनक व्यवहार पर एक शब्द तक न बोलें और पूर्णतया चुप्पी साध लें, यह समझ से परे लगता है। इसी प्रकार जो मोदी, पूर्व राष्ट्रपति को, एक देश एक चुनाव वाली समिति का अध्यक्ष बनाने और स्वायत्त संस्था आर बी आई के गवर्नर को प्रधानमंत्री कार्यालय में सचिव के पद पर लगाने जैसा असामान्य निर्णय लेने की क्षमता रखते हों, वे इतना सब होने पर भी चुप्पी साधे रहें, यह रहस्यात्मक लगता है। इसी कारण यह अटकलें भी लगाई जा रही हैं कि मोदी, कहीं राजनीति से पलायन की तो नहीं सोच रहे हैं।

इन सब अटकलों पर विराम तो तब ही लगेगा जब प्रधानमंत्री अपनी लंबी चुप्पी तोड़कर ट्रंप के अपमानजनक व्यवहार का उपयुक्त जवाब देंगे। भारत के नागरिक को यह जानने का हक है कि उनके प्रधानमंत्री ने इस प्रकार आत्मसमर्पण का भाव अपनाकर चुप्पी क्यों साध रखी है? जब तक वे ऐसा नहीं करेंगे, लोग अपनी–अपनी सुविधानुसार इस चुप्पी का अर्थ निकालते रहेंगे।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

क्या सोशल मीडिया के बगैर जीवन संभव है...

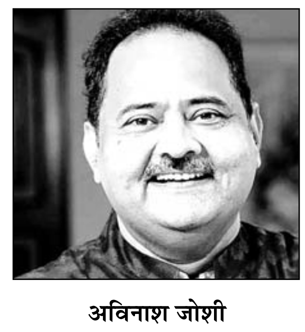

अविनाश जोशी

सोशल मीडिया आज के इंटरनेट युग का एक अभिन्न अंग है जिसका दुनिया में एक अरब से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है। यह एक ऑनलाइन मंच है जो उपयोगकर्ता को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने एवं वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहभागिता करने की अनुमति देता है। सोशल मीडिया नेटवर्किंग के कई रूप हैं जिनमें वेबलॉग, सामाजिक ब्लॉग, माइक्रोब्लागिंग, विकीज, सोशल नेटवर्क, पॉडकास्ट, फोटोग्राफ, चित्र, वीडियो शामिल हैं। इन सबमें फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्ययूब सबसे ज्यादा प्रचलित है। बीते कुछ वर्षों से पूरी दुनिया में इसकी जरूरत और ग्लोबल कम्यूनिकेशन में इसके रोल को हाइलाइट करने के लिए वर्ल्ड सोशल मीडिया डे मनाया जाने लगा है। 1997 में दुनिया का सबसे पहले पहला सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लॉन्च हुआ था। इसका नाम सिक्स डिग्री था। इस प्लेटफॉर्म को एंड्रयू वेनरिच ने शुरू किया था।

सोशल मीडिया एक ऐसा टूल है जो अपने यूजर–फ्रेंडली फीचर्स के कारण इन दिनों काफी लोकप्रिय हो रहा है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर और अन्य जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लोगों को दूर–दूर तक एक–दूसरे से जुड़ने का मौका दे रहे हैं। दूसरे शब्दों में, सोशल मीडिया की बदौलत पूरी दुनिया हमारी उंगलियों पर है। युवा विशेष रूप से सोशल मीडिया के सबसे प्रभावशाली उपयोगकर्ताओं में से एक है। जब हम सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलू पर नजर डालते हैं तो हमें इसके कई फायदे नजर आते हैं। सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा के लिए एक बेहतरीन उपकरण होना है। सभी आवश्यक जानकारी बस एक क्लिक दूर है। छात्र सोशल मीडिया का उपयोग करके विभिन्न विषयों पर खुद को शिक्षित कर सकते हैं।

इसके अलावा, सोशल मीडिया के कारण अब लाइव व्याख्यान संभव है। आप भारत में बैठे–बैठे अमेरिका में हो रहे किसी लेक्चर को अटेंड कर सकते हैं जैसे–जैसे अधिक से अधिक लोग अखबारों से दूरी बना रहे हैं, वे खबरों के लिए सोशल मीडिया पर निर्भर हो रहे हैं। इसके जरिए आप दुनिया की ताजातरीन घटनाओं से हमेशा अपडेट रहते हैं। एक व्यक्ति दुनिया के मुद्दों के प्रति सामाजिक रूप से अधिक जागरूक हो जाता है। यह आपके प्रियजनों के साथ संबंधों को मजबूत करता है। सोशल मीडिया के कारण अब दूरी कोई बाधा नहीं रह गई है। उदाहरण के लिए, आप विदेशों में अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ आसानी से संवाद कर सकते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह युवा उभरते कलाकारों को मुफ्त में अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक बेहतरीन मंच भी प्रदान करता है। सोशल मीडिया के जरिए भी आपको रोजगार के बेहतरीन मौके मिल सकते हैं। यह निश्चित रूप से उन कंपनियों को फायदा पहुंचाता है जो अपने ब्रांड का प्रचार करना चाहती हैं। सोशल मीडिया विज्ञापन का केंद्र बन गया है और आपको ग्राहक से जुड़ने के बेहतरीन अवसर प्रदान करता है।

सिक्के के दो पहलू होते हैं इतने अनोखे फायदे होने के बावजूद भी सोशल मीडिया हमेशा विवादो के घेरे में ही रहता है तथा कुछ विशेष परिस्थितियों में इसे समाज के सबसे हानिकारक तत्वों में से एक माना जाता है। अगर सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर निगरानी नहीं रखी गई तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। यह आपकी निजता पर हमला करता है। सोशल मीडिया पर होने वाली ओवरशेयरिंग बच्चों को शिकारियों और हैकर्स का निशाना बनाती है। इससे साइबर बुलिंग भी होती है जो किसी भी व्यक्ति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। सोशल मीडिया पर विशेष रूप से बच्चों द्वारा साझा की जाने वाली सामग्री पर हर समय निगरानी रखी जानी चाहिए। कई बार यह लत छात्र जीवन के शैक्षिणक प्रदर्शन में बाधा डालती है क्योंकि वे पढ़ाई के बजाय सोशल मीडिया पर अपना समय बर्बाद करते हैं। सोशल मीडिया सांप्रदायिक दरार भी पैदा करता है। इसके इस्तेमाल से फर्जी खबरें फैलाई जाती हैं, जो शांतिप्रिय नागरिकों के दिमाग में जहर घोलती हैं। स्कूल–कालेजों में बच्चों को इस लत से मुक्ति के नुस्खे समझाए–बताए जाते हैं। मगर चिंता की बात है कि कम होने के बजाय सोशल मीडिया मंचों की लत भयावह रूप लेती जा रही है। एक नए अध्ययन में बताया गया है कि बहुत सारे युवा सोशल मीडिया पर अपने किसी चित्र या टिप्पणी पर मिली पसंद से धूम्रपान जैसा आनंद महसूस करते हैं। जाहिर है, इसीलिए वे लगातार सोशल मीडिया पर बने रहते हैं। पहले के अध्ययनों से भी जाहिर है कि इससे युवाओं, किशोरों में दिमाग के भीतर पैदा होने वाले आनंद के रसायन का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे उन्हें सुख मिलता है। मगर इस सुख के चलते उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर पड़ता है, युवा इसका अनुमान नहीं लगा पाते।

आज की पीढ़ी किताबो को अपने लिविंग रूम में सजा तो रही है लेकिन पढ़ने के नाम पे सन्नाटा ही नजर आता है। किताबें पढ़ने की आदत बहुत तेजी से खत्म हो रही है। जाहिर है, इससे भटकाव की स्थिति भी कई बार भयावह सी दिखाई देती है। हमे पुराण, वेद, ग्रंथ, साहित्य एवम शिक्षा संबंधी किताबो को आभाषी दुनिया से जोड़ना होगा जिससे नई पीढ़ी किताबो में रुचि ले सके।

कुछ लोगो का मत हैं कि इससे स्कूली पाठ्यक्रम का अध्ययन बाधित होता है और कई तरह की व्यवहारगत समस्याएं पैदा होती हैं चिड़चिड़ापन, अकेलापन, अवसाद, हिंसक वृत्ति, असंवेदनशीलता, समाज से विच्छिन्नता आदि जैसे मानसिक विकार अब युवाओं में आम हो चले हैं। इससे पार पाने के अनेक उपाय किए जा रहे हैं, मगर समस्या यह है कि जब तक युवाओं को खुद इस बात का अहसास न हो और वे इस लत से मुक्ति पाने की कोशिश न करें, तब तक कोई भी उपाय कारगर साबित नहीं हो पाता। आमतौर पर बच्चों को अनुशासित करने की जिम्मेदारी माता–पिता की समझी जाती है। हर माता–पिता चूंकि सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों से वाकिफ है, अपने बच्चों को इससे दूर रखने का प्रयास करता भी है। मगर चीजें अब इस कदर उलझ चुकी हैं कि अभिभावक भी इसके आगे हथियार डाल चुके हैं। स्कूलों की पढ़ाई–लिखाई, अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं की सामग्री भी तो इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाते युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आए जोखिम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनलाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर इस चालू सिद्धांत के मोहजाल में फंसकर युवा जिस तरह के अंदाज, ढंग और भाषा को बरत रहे हैं, वह नितांत खोखलेपन का शिकार हो रहा है। यह विडंबना ही है कि एक असभ्य भाषा सोशल मीडिया पर खूब प्रसार पाती है या पसंद की जाती है। सवाल है कि क्या हमारा समाज इसी तरह का बन रहा है !

अजीबोगरीब 'इमोजी' की भाषा में बात करना और रटे–रटाए दो–तीन जुमले बोलने से कोई आधुनिक नहीं बन जाता। यह बात आज की पीढ़ी को समझ नहीं आ रही है। सच यह है कि यह सजगता और होश की कमी है जो आज की 'फटाफट संस्कृति' की देन है। नए–नए प्रसाधन लगाकर खुद को चमका लेना एक बात है और एक ठहराव तथा गंभीरता होना दूसरी बात।सोशल मीडिया में लोकप्रिय होना एक तिलिस्म है। आज हम सुबह उठते ही सबसे पहले सोशल मीडिया से अपना नाता जोड़ अपने दिन की शुरुआत करते है चाहे वो फेसबुक इंस्टाग्राम या फिर ट्विटर ही क्यों न हो। आखिर जिंदगी के इतने महत्वपूर्ण क्षण आप जब सोशल मीडिया को दे रहे है

बेहतर यही होगा कि हमारे युवा अपने लिए अपनी मौलिकता से जरा–सा अलग, मगर एकदम नया गढ़ें। दूसरों के बनाए फटाफट वाले चालू रास्ते पर चलना, रातों–रात लोकप्रिय होने की ख्वाहिश और उसके लिए ऊटपटांग तौर–तरीके अपनाना दरअसल, सृजनात्मकता बिल्कुल नहीं है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए कि हम कितने कथित आधुनिक हैं। फर्क तब पड़ता है, जब हम अपने आसपास की दुनिया के लिए कुछ नवीन और हटकर सोच पाते हैं। ऐसा कतई नहीं होना चाहिए कि आभासी दुनिया में उलझे हमारे बच्चे अपनी मौलिक सोच, अपने सदगुण, अपनी सहजता को ही खो बैठें और यह दुनिया देखती रह जाए।

–अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

निवाई कृषि मण्डी में सरसों की बम्पर आवक, 40 हजार कट्ट्टे बिकने के लिए आए

सोमवार को सरसों 5500 से 5700 रूपये में बिकी, जिंसों की आवक लगातार जारी रहने से मण्डी में रौनक लौटी, मेले जैसा माहौल रहा

निवाई, (निसं)। सोमवार को कृषि मण्डी में सरसों की बम्पर आवक हुई, जिससे मण्डी में मेले जैसा माहौल नजर आया। सोमवार को मण्डी में सरसों के करीब 40 हजार कट्टे बिकने के लिए आए। झिलाय रोड स्थित रेलवे फाटक पर ओवरब्रिज के निर्माण कार्य के चलते रास्ता डायवर्ट कर रखा है, जिससे 80 फीट रोड होते हुए श्याम मंदिर से आवागमन होने के कारण श्याम मंदिर के बाहर वाहनों की लम्बी कतारें लग गई, जिससे एकादशी के पर्व पर श्याम मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं व कॉलोनिवासियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। सुबह से ही मण्डी के बाहर प्रवेश के लिए वाहनों की लम्बी कतारें लग गई। मण्डी का गेट सुबह सात बजे खुलने के साथ ही सरसों के कट्टे से भरे हुए वाहन अन्दर प्रवेश करने लगे। सरसों के साथ–साथ अन्य जिंस भी बिकने के लिए आई।

व्यापारी टोनू शिवाड़ व पवन बोहरा ने बताया कि सोमवार को सरसों के करीब 40 हजार कट्टों की आवक हुई है। उन्होंने बताया कि सरसों 5500 से 5700 रूपये में बिकी। जिंसों की आवक लगातार जारी रहने से मण्डी में रौनक लौट आई है और दिनभर जिंसों से भरे वाहनों की आवाजाही के चलते मण्डी परिसर में मेले जैसा माहौल हो रहा है। वहीं वाहनों की अधिकता के चलते जाम की स्थिति बनी हुई है। उन्होंने बताया कि व्यापारियों ने दोपहर 12 बजे बाद बोली लगाई। इन दिनों में मण्डी में टोंक जिले के अनेक गावों सहित सवाईमाधोपुर व दौसा जिले के गांवों से भी सरसों बेचने के लिए किसान मण्डी में पहुंच रहे हैं। इस दौरान मंडी सचिव कमलकिशोर सोनी, रामावतार घाटी, शिवप्रकाश पारीक, विष्णु बोहरा, अमित कटारिया, केदार खण्डेलवाल, घनश्याम शर्मा, दीपक गुप्ता, ओमप्रकाश चंवरिया, अजय जैन व राजेन्द्र चौधरी सहित कई व्यापारी मौजूद थे।

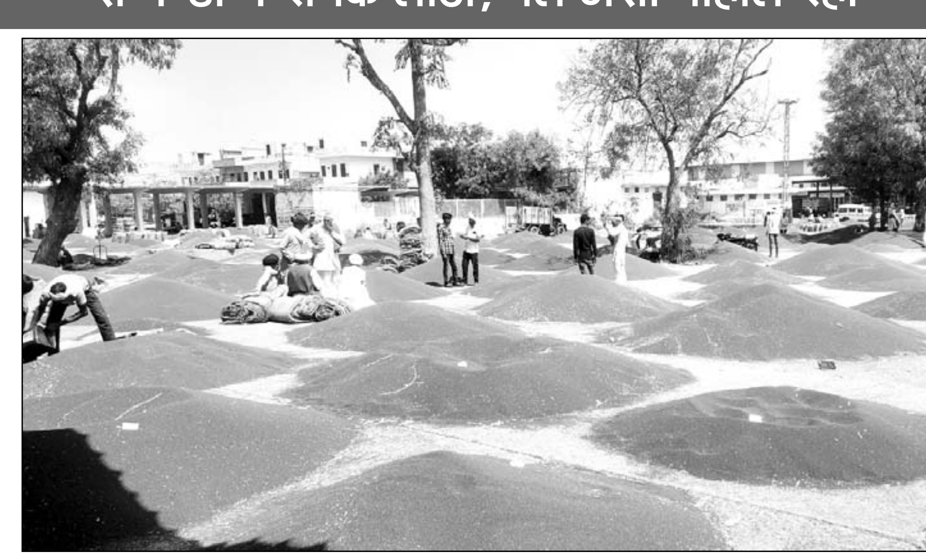

निवाई में कृषि मण्डी परिसर में दुकानों के बाहर लगे हुए सरसों के ढेर।

- **टोंक जिले के अनेक गावों सहित सवाईमाधोपुर व दौसा जिले के गांवों से भी सरसों बेचने के लिए किसान मण्डी में पहुंच रहे हैं**

आंतरिक सुरक्षा और इंडो–पाक बॉर्डर पर आवाजाही को नियंत्रित करने पर जोर

- **कलेक्टर की अध्यक्षता में हुई बैठक में कलेक्टर ने ड्रोन, मादक पदार्थों और सोशल मीडिया पर नजर रखने के निर्देश दिये**

श्रीगंगानगर, (निसं)। श्रीगंगानगर में आंतरिक सुरक्षा और इंडो–पाक बॉर्डर सुरक्षा को मजबूत करने के लिए कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला स्तरीय स्टेंडिंग कमेटी की बैठक आयोजित की गई।

जिला कलेक्टर डॉ. मंजू की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में नार्को को–ऑर्डिनेशन सेंटर के मुद्दों पर भी चर्चा हुई। कलेक्टर ने सीमावर्ती क्षेत्रों में अवैध गतिविधियों और मादक पदार्थों पर रोक लगाने के लिए कड़े निर्देश दिए। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय सीमा पर वैध–अवैध आवाजाही को नियंत्रित करने पर जोर दिया। ड्रोन गतिविधियों की रोकथाम के लिए पुलिस और अन्य एजेंसियों को सतर्क रहने को कहा। बैठक में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई। इनमें अक्षीय और समानांतर सड़कों का निर्माण, नशामुक्त श्रीगंगानगर अभियान, भारत माला सड़क की सुरक्षा के लिए नई पुलिस चौकियां और सीसीटीवी कैमरों की स्थापना शामिल थी। कलेक्टर ने सीमावर्ती क्षेत्रों में इंटरनेट व सोशल मीडिया के दुरुपयोग पर भी कड़ी नजर रखने के निर्देश दिए। पुलिस और बीएसएफ को आपसी समन्वय से काम करने को कहा गया। धार्मिक गतिविधियों और वाहनों की आवाजाही पर विशेष नजर रखने के निर्देश दिए गए। बैठक में एडीएम प्रशासन सुभाष कुमार, एएसपी रघुवीर शर्मा, जिला परिषद सीईओ गिरधर समेत कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 11 मार्च, 2025

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, आश्लेषा नक्षत्र रात्रि 2:15 तक, अतिगंड योग दिन 1:17 तक, बालव करण प्रात: 8:14 तक, चन्द्रमा रात्रि 2:15 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कुम्भ, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–मिथुन, बुध–मीन, गुरू–वृष, शुक्र–मीन, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 2:15 तक है। रवि योग रात्रि 2:15 से आरम्भ होगा। आज गोविन्द द्वादशी, भौम प्रदोष व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:41 से 11:04 तक, लाभ–अमृत 11:04 से 2:05 तक, शुभ 3:33 से 5:01 तक।

राहूकाल: 3:00 से 04:30 तक। सूर्योदय 6:45, सूर्यास्त 6:29

मेष
घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। व्यावसायिक सुविधाओं पर धन खर्च होगा।

कर्क
व्यावसायिक वार्ता के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर
घर–परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में उचित परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।